

क्रामण्यायनमः॥समाव्यामणिसार्यमास्याद्रपद्रव्यादा छीउत्पष्टी संस्थाग्र रखेष्ठी वृतेन ध्यामत्वेष्यादिमन् मनासनामिनी मिदीचि यप्त्रेवा त्रादेमता ने प्राध्यम्या स्तालामध्य र समय इस केला सामध्यान्त्या पित्रोतिष्ये प्रोबा । प्राप्त तः प्रवास तीप चन्न नामय षु त्रास्छातं रंगवल्यां देगतः कर्ता तास्रायमं उत्तक्षात् ।पचपद्मान्तवाह मसोभाषा देश युक्त पंचवाय मानिसंपा यतं थान रशिनारवाप की माना रवा कु इसि वंका गुस्तव जनाने अन्तर्याः प्रतिमाषु नासाम मान्यस्याय प्रध्यान् स्तानाधातन स्त्राव्यात्रार्थमारामान्यान्य स्वासमीत्यात्र त्राविषां स्वाप्तिनीत्रः सर्युना सानप्राच अप प्र जास मार प्रत्यात सब हरी आहवा ही ना से वण के लास मा तो कत नवस्त्रणाव रूपतद्य मनाती रान्द्र प्रातिमा स्थापय व ।। ना क्रणे स्थापन क्योत इस्तिलात्त्वसम्बानिस्त्रमानिस्त्रमम्बानिस्त्रमम्बानिस्तिमानिस्तिमानिस्तिमानिस्तिमानि प्रतिभाति। तुर्त्र सं केल्पः गस्म् स्वध्यः या हिमम हजन्मित्र जन्मातर च व ध्याका क वं ध्याम्हतवं ध्याप् दा पपर्रहार दारादी घो यः भी विज्ञानी ति वत प्रविषा निष तथावाद्यान मात्रात्रप्राध्यक्ष स्राहलव्यामवानी स्वत्र प्राध्यवाद्या Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

प्यार्ष्माकारिया।गणपातिष्रमेनारिकत्रमाराध्यमेन तं स्वाप्राणप्रतिष्ठाक्रमोत्।अथस्या नंगकर्र मारं के हणान तारं धं सार्वारं भू में में हु हा रं ।। यदान खंते हु द्यार विद् भनभना नी प्रतिने मामि। भीभवानी में क ए भाग वेमना आगा छद् वह वस्प म यद् में कि ति छ या। पूजियामि विधानन प्रसन्तः सुमु विभान । आवाहना। पारासनं कु ए प्रानित र्म में हार्जा त्रापित गामा चतावावाचे परते कुरु हे पार्च मामने गामा माना गाना कंत्रिम्ल्द्रम्यात्रार्थनयाहतं।।तायम् तस्य ख्यम् अपाधार्थत्रति हिस्ता। पाछा।मधार्कतमुख्यणचर्ननस्य गाधना।अधिर हाणद्वन्य मिस्यच (मार्क्राज्यां) इस मान्यमतीयं संया विश्वश्वर प्रभाग्य हाणपर मञ्जान वृष्ट प्रवसमायने ।। जा-वेमनीय।। नमास्तु सर्वकामद्रा यो माद्र सर्वधारिका। मधुप र्द्रभयाद्ते यहाणप्रमेश्वर्णमध्यम्भाषामान्यमहादेवसर्वयापिनात्रम् राह्य पर्ना क्रियत वाध्य प्रसन्ती मवस वद्या। प्रयस्ताना द द्रमच वसहाद व स्तप मित्रपतिषया।। गर राणानुस्याभागस्य प्रसन्नाभगान्य यागस्य ।। माप्यान महाहद्र स्तप्रमिन्नयते मया।। यहाणानं ह्यादत्तं तब तुष्य धी मन-वाण्यता। राम

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

इदं मध्यमधार्नात्वस्तानार्धमय नाग्टहाणद्यद्वे द्रात्तत्र द्राणित्रयष्ठम् ।। मध्या सत्य रवदेन्य सम्पत्र क्रियतमयागतत स्वंत्रा हमाप्ना, प्रमुन्त्राभनम्बद्धार्भारा चंदाकियाः समानीत हमामाह ह नामितं। स्नाताय तमयण निया तीरस्नी क्रियता विमा।।। उद्यह्मस्यान। उत्तमने रामचनः।। वस्त्रस्त्रभद्कल्चद्वानामाष् इते मं ।।गरशाम्यम् मानात सर्व सरका मर्वा वस्त्रा यक्ताप्य नित सो वर्ष क्राला नितिष्राण्याययभवने चाचहपवीतारहाणम् भयत्रापनीतेणम्हण्यामा मरणाजन्यामामहस्मान्य नद् निर्मितानि। तटा दक्षणान्य मकुव्यान तवह सांग्रिस्य णाति। आभारणाजि। की खडेचरनेद्वमल्याच्यसम्नावित वतं सर त्रेष्ठ गर ता ना पर मान्य गा गांचा गांभा का ता ने धायता न से हा ने ते गांच होती विताक् । गर्मा वर्या मन्या मया निम्य ममार्थिता के । अस्ति हो दि हो जिता हेकाः सोभाग्यस्य स्व संपद्धा।अतस्वा म्र ज विष्या मिए हा ग्रायस्य भित्रा। पूरि में क्या कं क्रमंकार्य में दियं माम्माकाम् सभाग्या कंक्रमेना विते देवी गरहाण परम श्वरी। कं कामा विश्वयों के उत्तर में स्थान ने मान ने मान ने प्रयोगित Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ग राणपरमञ्चलि। कञ्चलं। विस्राधिमार्थक्यं संचय स्यप्रही यते के कित कामयेषा करेड में के कुम भारणां थे यह राणते हें आप विश्वमातः।। के कितिका करेड चे भक स्तर्षा घोष्ययगधा भोगार्थ ते मयोह ताः।। ताताप रिमल द्रे व्यं गराणपर मिश्वरण परिमत्तर् याणि। किपया र्वदेवन्त्र तवित्रात्यथे मवन्य।। एहाणतुम्य प्रथाण प्रयानीतानि मा मही पुष्पाणा। अवभागष्ठ नागनिवायन मः॥पादी है माना गु क्रां रामग् जिया गिरिमापत्य जानुनी महन्या उसल् सर्य स्तारा गुरु त्रिष्णातमा० कारि मामावरा नामि प्रमुपतय उदर जा पर्व हातहयं वामद्वां नाह नीत्न कठा कठ महाद्वा प्राव में बना ने ने ने ने करें। खाया ठता द्वामाध्या प्रात्व क्रमामहम्बराभ्यानमः संबंधित ॥ देख त्रिगुणाकारं गावनस्पातरसाक्तिना गधारयः समनाहरः ॥आत्रयः सर्वहत्या ता भूषायंत्रात गास्त्र मा भूषा। सा अपित्र में त्र से युक्त य हिना वा जिते भया।। हो वंग राणद्य रा में शायमा मिरायहा। हो वंगपाय मा प्रप्रकान सं योपस्त रमंय तं । ने बयं र खता है न के पार्क समय प्राण ने व या गा गाई केस मानीत एम

हमकं अनिर्मिलं ॥ युकाक प्रविषा हुं भागा ने पर मिश्वर्॥ मध्येषा नी ये ॥ उत्तरा पाना मार्थ ने आनी ता ता सत्ते मारा हाण च मुमाना ता सने दुः रवा नि भार ना। उत्तरापार्यनाह साम्रक्षालमाम् रवम् साल्नाणमामानुस्तरियामानुस्तरमानुस्त वलसमवाण्हाणाचं दत्रमाम करोहत नहत्वणक रहतेनं एक द्रतेन तवणाहिष्रगान्त्रमान्वतं।।तान्त्रने मान्यतंभत्या गाराणार नाष्ट्रया। मार्सि। इद प्रस्नामित फलेंग हिर ज्या मित्र विणागा दीपाय तिसमाय कंत्रवानीस्त्रिलान्वना।आतिवयसगढ्गानारं ममज्ञानप्रहोपवा।नीरा जाने। युष्यां ने। तय हा राज्यां मास्त्रना दिपिः।। उद्योगमास्त देन प्रयथमधा धिया प्रविधिया मित्रानि । या निकानी निषद । इने णा। न सामि वां विस्तपाश्निता एक कर महत्त्र ता ता जन नाय नमस्त्र भार हा भार जा। त्रिश्तिधारिनत्यम्भतामप्तस्य सम्भागमस्यार्गित्। अस्य

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

था शरणं आ भारतं मां वाय स्था सा ।। र ति पूर्म पर्या । ततो ब्राह्म प्रमा प्रम प्रमा प्रम प्रमा प्रम प्रमा प्रम प्रमा प्रम प्रमा प्रम प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रमा प्रम प्रमा प्रम प्रमा प्

り万万